



## 19. सत्यं मयूरः



संस्कृत रूपक के दस प्रकार हैं। उनमें से एक प्रकार प्रहसन है। ये प्रहसन एकांकी होते हैं और उनकी कथावस्तु एक दिन जितनी मर्यादित होती है। संस्कृत साहित्य में ऐसे जो अनेक प्रहसन लिखे गए हैं, उनमें सबसे अधिक प्रसिद्धि 'भगवदज्जुकीयम्' नामक प्रहसन को मिली है। कुछ विद्वानों के मतानुसार इसके रचयिता बोधायन नामक कवि हैं, जबकि कुछ विद्वान इस रचना को बोधायन की नहीं, बल्कि किसी अज्ञात कवि की मानते हैं। इसका रचनाकाल लगभग ई.स. की चौथी शताब्दी है। प्रस्तुत नाट्यांश इसी 'भगवदज्जुकीयम्' प्रहसन में से संपादित करके लिया गया है।

गरीब परिवार में जन्म लेने वाला शांडिल्य सरलता से खाने को मिल जाएगा, ऐसी भावना से घर छोड़ देता है और बौद्ध साधू बन जाता है। परन्तु यहाँ तो बार-बार उपवास करना पड़ता था, जिससे वह शांडिल्य बौद्ध साधु का वेश छोड़कर एक दूसरे पहुँचे हुए योगी का शिष्य बन जाता है। यहाँ भी उसका ध्यान खाने में ही रहता है, परन्तु उसके ये गुरु हमेशा पढ़ने के लिए ही कहते हैं। रोज भिक्षा लेने के लिए नगर में आने वाले ये गुरु-शिष्य एक दिन समय से पहले नगर में आ गए। समय का महत्व समझने वाले गुरु अपने शिष्य को इस समय दरम्यान रास्ते में आए बगीचे में बैठकर थोड़ा पढ़ने के लिए कहते हैं। दोनों लोग बगीचे में प्रवेश करते हैं, उसी समय का दृश्य इस नाट्यांश में है।

शांडिल्य की बहानाबाजी हास्य उत्पन्न करती है। इस संवाद पर से इस बात का ख्याल आता है कि बचपन में माता की कही बातों का कितना गंभीर प्रभाव मनुष्य के जीवन पर पड़ता है। मनुष्य चाहे जितना बड़ा हो जाए तो भी माता द्वारा कही बातों से उसमें जो संस्कार पड़ जाते हैं, वे दूर नहीं हो सकते हैं। साथ ही विद्याध्ययन किसलिए करना चाहिए इस प्रश्न का उत्तर भी यहाँ आने वाले संवादों से मिलता है।

**शाण्डिल्यः** - भो भगवन् ! इदमुद्यानम्।

**परिव्राजकः** - प्रविश अग्रतः।

**शाण्डिल्यः** - भगवान् एव पुरतः प्रविशतु। अहं पृष्ठतः प्रविशामि।

**परिव्राजकः** - किमर्थम्।

**शाण्डिल्यः** - पौराणिक्याः मम मातुः श्रुतम् अशोकपल्लवान्तरनिरुद्धो व्याघ्रः प्रतिवसति। तत् भगवानेव पुरतः प्रविशतु अहं पृष्ठतः प्रविशामि।



परिव्राजकः - बाढम् । ( प्रविशति । )

( ततः प्रविशति शाण्डिल्यः । )

शाण्डिल्यः - अविहा ! व्याघ्रेण गृहीतोऽस्मि । मोचयथ मां व्याघ्रमुखात् । अनाथ इव व्याघ्रेण खादितोऽस्मि । इदं खलु रुधिरं प्रस्रवति कण्ठात् ।

परिव्राजकः - शाण्डिल्य ! न भेतव्यं, न भेतव्यम् । मयूरः खलु एषः ।

शाण्डिल्यः - सत्यं मयूरः ।

परिव्राजकः - अथ किम् । सत्यं मयूरः ।

शाण्डिल्यः - यदि मयूरः उद्घाटयामि अक्षिणी ।

परिव्राजकः - छन्दतः ।

शाण्डिल्यः - अविधा ! दास्याः पुत्रो व्याघ्रो मद्भयेन मयूररूपं गृहीत्वा पलायते । ही ही ! चम्पक-कदम्ब-सप्तपर्ण-चन्दन-तगर-खदिर-कदलीसमवकीर्णं मालती-लता-मण्डप-मण्डितं सुखावहमहो रमणीयं खलु इदम् उद्यानम् ।

परिव्राजकः - मूर्ख ! क्षणे क्षणे क्षीयमाणे शरीरे किं ते रमणीयम् । आगच्छ वत्स ! पठ तावत् ।

शाण्डिल्यः - न तावत् पठिष्यामि ।

परिव्राजकः - किमर्थम् ?

शाण्डिल्यः - पठनस्य तावत् अर्थः ज्ञातुम् इच्छामि ।

परिव्राजकः - पठितपाठैः अपि कालान्तरविज्ञेया भवन्ति पठनार्थाः । तस्मात् पठ तावत् ।

शाण्डिल्यः - पठनेन किं भविष्यति ?

परिव्राजकः - शृणु - पठनेन विना न प्राप्यते विद्या ।

न विद्यया विना सौख्यं नराणां जायते ध्रुवम् ।

अतो धर्मार्थमोक्षेभ्यो विद्याभ्यासं समाचरेत् ॥

### टिप्पणी

संज्ञा : ( पुल्लिङ्ग ) शाण्डिल्यः इस नाम का शिष्य व्याघ्रः बाघ मयूरः मोर

( स्त्रीलिङ्ग ) पौराणिकीः पुराणों का अध्ययन करने वाली, पुराण को जानने वाली

( नपुंसकलिङ्ग ) उद्यानम् उपवन, बाग रुधिरम् लहू, रक्त

विशेषण : सुखावहम् रमणीयम् ( उद्यानम् ) सुख का वहन करने वाला, पसंद आए वैसा - आनन्दित कर दे ऐसा बाग क्षीणमाणे ( शरीरे ) दुर्बल होते शरीर में, क्षीण होते शरीर में

अव्यय : अग्रतः आगे से पुरतः सामने से पृष्ठतः पीछे से अविहा दुःख मिश्रित आश्चर्य को व्यक्त करने वाला अव्यय, हाय रे ! अथ किम् हाँ तो, तो क्या छन्दतः इच्छा के अनुसार अविधा दुःख मिश्रित आश्चर्य को व्यक्त करने वाला ( शब्द ) अव्यय, हाय रे ! तावत् उतना, उसके अनुसार



**समास :** अशोकपल्लवान्तरनिरुद्धः (अशोकस्य पल्लवः (अशोकपल्लवः, षष्ठी तत्पुरुष), अशोकपल्लवस्य अन्तरम् (अशोकपल्लवान्तरम्, षष्ठी तत्पुरुष), अशोकपल्लवान्तरे निरुद्धः - सप्तमी तत्पुरुष)। व्याघ्रमुखात् (व्याघ्रस्य मुखम्, तस्मात् - षष्ठी तत्पुरुष)। मद्भयेन (मत् भयम्, तेन - पञ्चमी तत्पुरुष)। मयूररूपम् (मयूरस्य रूपम् - षष्ठी तत्पुरुष)। चम्पक-कदम्ब-सप्तपर्ण-चन्दन-तगर-खदिर-कदलीसमवकीर्णम् (चम्पकः च कदम्बः च सप्तपर्णः च चन्दनः च तगरः च खदिरः च कदली च चम्पक-कदम्ब-सप्तपर्ण-चन्दन-तगर-खदिर-कदल्यः (इतरेतर द्वन्द्व), ताभिः समवकीर्णम् - तृतीया तत्पुरुष)। मालती-लता-मण्डप-मण्डितम् मालतीलतायाः मण्डपम् (-मालतीलतामण्डपम्, षष्ठी तत्पुरुष), मालतीलतामण्डपेन मण्डितम् - तृतीया तत्पुरुष)। पठितपाठैः (पठितः पाठः येन - पठितपाठः, तैः - बहुव्रीहि)। कालान्तरविज्ञेया (कालस्य अन्तरम् (कालान्तरम्, षष्ठी तत्पुरुष), कालान्तरे विज्ञेया - सप्तमी तत्पुरुष)। धर्मार्थमोक्षेभ्यः (धर्मः च अर्थः च मोक्षः च - धर्मार्थमोक्षाः, तेभ्यः - इतरेतर द्वन्द्व)। विद्याभ्यासः (विद्यायाः अभ्यासः - षष्ठी तत्पुरुष)।

**कृदन्त :** ( क.भू.कृ. ) गृहीत ग्रहण किया, पकड़ा, लिया **खादित** खाया हुआ, खा लिया ( वि.कृ ) भेतव्यम् डरना चाहिए, डरने योग्य **रमणीयम्** सुन्दर, आनन्दित करने वाला

**क्रियापद :** प्रथम गण ( परस्मैपदी ) आ + गम् > गच्छ ( आगच्छति ) प्रवेश करना, अन्दर आना **पठ्** ( पठति ) पढ़ना, पाठ करना **इष् > इच्छ् ( इच्छति )** चाहना, इच्छा करना

**छठा गण :** ( परस्मैपदी ) प्र + विश् ( प्रविशति ) प्रवेश करना

### विशेष

**1. शब्दार्थ :** अशोकपल्लवान्तरनिरुद्धो व्याघ्रः अशोक के पत्तों के पीछे टिक कर, रुका हुआ-छिपा हुआ बाघ **प्रतिवसतीति** रहता है ऐसा, निवास करता है ऐसा **तत्** इसलिए **बाढम्** ठीक है **व्याघ्रेण गृहीतोऽस्मि** बाघ ने मुझे पकड़ लिया है, बाघ के द्वारा मैं पकड़ लिया गया हूँ **मोचयथ मां व्याघ्रमुखात्** बाघ के मुख में से मुझे छुड़ावाइए **अनाथ इव** अनाथ की तरह **व्याघ्रेण खादितोऽस्मि** शेर ने मुझे खा लिया है, बाघ के द्वारा मैं खा लिया गया हूँ **रुधिरं प्रस्रवति** रक्त बह रहा है **कण्ठात्** गले में से, कंठ में से **मयूरः खल्वेषः** यह तो सच में मोर है **सत्यं मयूरः** सच में मोर है ? **यदि मयूरः उद्घाटयाम्यक्षिणी** यदि मोर ही है तो मैं अपनी आँखें खोलता हूँ **दास्याः पुत्रो व्याघ्रः** दासी का पुत्र ऐसा बाघ (संस्कृत भाषा में दास्याः पुत्रः - इस शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति की ओर हेय भावना व्यक्त करने के लिए किया जाता है।) **मद्भयेन** मेरे डर से, मेरे भय से **मयूररूपं गृहीत्वा** मोर का रूप धारण करके **पलायते** भाग जाता है, भाग गया **ही ही !** ओह हो **चम्पक-कदम्ब-सप्तपर्ण-चन्दन-तगर-खदिर-कदलीसमवकीर्णम्** चम्पक, कदम, सप्तपर्णी, चन्दन, तगर, खैर और केले से भरे हुए **मालती-लता-मण्डप-मण्डितम्** मालती की लताओं से सुशोभित मंडप **मूर्खं अरे मूर्ख क्षणे क्षणे क्षीयमाणे शरीरे** क्षण-क्षण क्षीण होने वाले शरीर में, जब क्षण-क्षण में शरीर क्षीण हो रहा है तब **किं ते रमणीयम्** तुम्हारे लिए क्या रमणीय होगा ? **न तावत् पठिष्यामि** तब तो मैं नहीं पढ़ूँगा **ज्ञातुम् इच्छामि** जानने का इच्छुक हूँ, जिज्ञासु हूँ **पठितपाठैः अपि** पाठ को जो लोग पढ़ चुके हैं, उन लोगों को भी **कालान्तरविज्ञेयाः** समय आने पर जानकारी में आएँ ऐसे **पठनार्थाः** पढ़ने का अर्थ **तस्मात् पठ तावत्** इस लिए तुम पढ़ो **पठनेन किं भविष्यति** पढ़ने से क्या होगा ? **पठनेन विना** पढ़े बिना **न प्राप्यते विद्या** विद्या प्राप्त नहीं होती **विद्यया विना** विद्या बिना **सौख्यम्** सुख का भाव, सुखी **ध्रुवम्** निश्चित

**2. सन्धि :** अशोकपल्लवान्तरनिरुद्धो व्याघ्रः (अशोकपल्लवान्तरनिरुद्धः व्याघ्रः)। प्रतिवसतीति (प्रतिवसति इति)। गृहीतोऽस्मि (गृहीतः अस्मि)। अनाथ इव (अनाथः इव)। खादितोऽस्मि (खादितः अस्मि)। पुत्रो व्याघ्रो मद्भयेन (पुत्रः व्याघ्रः मद्भयेन)। अतो धर्मार्थमोक्षेभ्यो विद्याभ्यासम् (अतः धर्मार्थमोक्षेभ्यः विद्याभ्यासम्)।

## स्वाध्याय

### 1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) शाण्डिल्यः उद्याने कस्मात् भयम् अनुभवति ?

(क) चौरात् (ख) सिंहात् (ग) व्याघ्रात् (घ) परिव्राजकात्

(2) क्षणे क्षणे ..... शरीरे किं रमणीयम् ?

(क) नूतने (ख) क्षीयमाणे (ग) जायमाने (घ) वर्धमाने

(3) केन विना जनानां सौख्यं न भवति ?

(क) शक्त्या (ख) सम्पत्त्या (ग) विद्यया (घ) बुद्ध्या

(4) पुरतः शब्दस्य विरुद्धार्थकः कः शब्दः ?

(क) अग्रतः (ख) पृष्ठतः (ग) अनन्तरम् (घ) अपरः

(5) शाण्डिल्यस्य ..... रुधिरं प्रस्रवति ।

(क) कण्ठात् (ख) कण्ठे (ग) कण्ठम् (घ) कण्ठेन

(6) व्याघ्रः मयूररूपं ..... पलायते ।

(क) ग्रहीतुम् (ख) गृहीतम् (ग) ग्राह्यम् (घ) गृहीत्वा

(7) यदि मयूरः उद्घाटयामि अक्षिणी । अत्र अक्षिणी-शब्दस्य स्थाने उचितं शब्दं चिनुत ।

(क) नेत्राणि (ख) नेत्रे (ग) नेत्रम् (घ) नेत्रस्य

### 2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) कुत्र निरुद्धः व्याघ्रः उद्याने प्रतिवसति ?

(2) उद्यानं कः पुरतः प्रविशति ?

(3) शाण्डिल्यः कं व्याघ्रं मत्वा आक्रोशति ?

(4) विद्यां विना मनुष्याणां किं न जायते ?

### 3. अधोलिखितानां कृदन्तानां प्रकारं लिखत ।

(1) श्रुतम् .....

(2) निरुद्धः .....

(3) भेतव्यम् .....

(4) विज्ञेयाः .....

(5) रमणीयम् .....

#### 4. समासप्रकारं लिखत ।

- |                         |                              |
|-------------------------|------------------------------|
| (1) व्याघ्रमुखात् ..... | (2) धर्मार्थमोक्षेभ्यः ..... |
| (3) पठितपाठैः .....     | (4) मयूररूपम् .....          |
| (5) पठनार्थाः .....     |                              |

#### 5. वचनानुसारं धातुरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

- |              |       |             |
|--------------|-------|-------------|
| (1) प्रविश   | ..... | .....       |
| (2) .....    | ..... | प्रस्रवन्ति |
| (3) पठ       | पठतम् | .....       |
| (4) समाचरेत् | ..... | .....       |

#### 6. मातृभाषयाम् उत्तराणि लिखत ।

- (1) शांडिल्य उद्यान में प्रवेश करते समय क्यों भय का अनुभव करता है ?
- (2) बाघ ने पकड़ लिया है यह मानकर शांडिल्य क्या चिल्लाता है ?
- (3) शांडिल्य द्वारा किए गए उद्यान का वर्णन लिखिए ?
- (4) पढ़ने का अर्थ कौन कब समझ सकता है ?
- (5) विद्याभ्यास क्यों करना चाहिए ?

#### प्रवृत्ति

- संस्कृत भाषा में इस प्रकार के अन्य प्रहसन और उनके रचयिता के नाम की सूची बनाइए।
- अपने शहर या गाँव के बगीचे में जाइए और संक्षिप्त में उसके विषय में लिखिए।

●